ई-पत्रिका
2021

आवाज़

हिंदी विभाग,श्रीनारायणा कॉलेज शिवगिरी, वर्कला, तिरुवनंतपुरम

आवाज़

मुख्य संरक्षक

डॉ. के सी प्रीता

प्राचार्या,एस एन कॉलेज,वर्कला

संपादक

डॉ सजित्त एस जे शशी

विभागाध्यक्ष,हिंदी विभाग

एस एन कॉलेज,वर्कला

संपादकीय सलाह समिति

डॉ अनघा ए.एस

प्रध्यापिका

एस एन कॉलेज,वर्कला

श्रीनारायणा कॉलेज शिवगिरी,वर्कला-परिचय

महान संत श्री नारायण गुरु की दार्शनिक और भविष्यवादी दृष्टि से परिकल्पित, श्री नारायण कॉलेज, शिवगिरी, वर्कला की स्थापना 1964 में हुई थी। कॉलेज केरल विश्वविद्यालय से संबद्ध है और स्थापना के बाद से, संस्थान ने एक अमिट छाप छोड़ी है। केरल में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में श्री नारायण गुरु, जिनके नाम पर कॉलेज खड़ा है, सबसे महान समाज सुधारकों और आध्यात्मिक नेताओं में से एक थे, जो शिक्षा के माध्यम से सामाजिक मुक्ति के लिए खड़े थे। सामाजिक "शिक्षा के माध्यम से मुक्ति" के संदेश का वास्तविकता में अनुवाद किया गया था जब श्री। आर. शंकर, गुरु के प्रमुख अनुयायियों में से एक ने शिवगिरी की शांत पहाड़ियों पर श्री नारायण कॉलेज की नींव रखी। शिवगिरी की ऊंची-ऊंची पहाड़ियों में स्थित यह संस्था पिछले 56 वर्षों से ज्ञान के प्रेरक स्रोत के रूप में अपने मिशन को जारी रखे हुए है।

प्राचार्य की कलम से

खुशी की बात है कि हमारे कॉलेज से हिंदी पत्रिका आवाज़ का शुभारंभ किया जा रहा है।यह अध्यापक बंधुओं एवं छात्र छात्राओं के विचार एवं प्रतिभा को हिंदी में दर्शाने का माध्यम है।इसे कॉलेज में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने की दूसरी सीढ़ी मानना चाहिए। मैं आशा करती हूँ कि ई-पत्रिका आवाज़ पूरे कॉलेज में प्रचलित हो। इसके पीछे काम करनेवाले सभी लोगों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. के.सी प्रीता

प्रचार्या,एस एन कॉलेज वर्कला

विभागाध्यक्ष की कलम से

हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए हिंदी ई-पत्रिका आवाज़ कॉलेज की एक पहल है। हिंदी को बढ़ावा देने का यह कदम निश्चय ही सराहनीय है ।मुझे अत्यंत हर्ष है कि मुझे इस पत्रिका के संपादक का दायित्व सौंपा गया। यह पत्रिका कॉलेज के छात्र-छात्राओं के अनुभवों एवं मनुभावों का संग्रह है।मुझे उम्मीद है कि यह ई-पत्रिका आप सभी को ज़रूर पसंद आयेगी ।इसकी आगे की यात्रा केलिए आप सभी का प्रोत्साहन एवं सहयोग की कामना करता हूँ।

डॉ सजित्त एस जे शशी

विभागाध्यक्ष,हिंदी विभाग

एस एन कॉलेज,वर्कला

विषय सूची

1. आत्मा(कविता)
2. अच्छे व्यवहार का रहस्य(कहानी)
3. कबीर दास(कवि परिचय)
4. मुंशी प्रेचंद(लेखक परिचय)
5. बापुजी हमारा राष्ट्रपिता(कविता)
6. स्वास्थ्य जीवन का उपयोग(कहानी)
7. रात(कविता)
8. गतिविधियों की छवियाँ
9. बच्चों की पेंटिंग

****

आत्मा

प्रतीक्षा,बीएससी जीव विज्ञान

मैं मिट्टी में अकेला हूँ,
बिना कुछ कहे आसमान में।
सूरज और चाँद बिखरे बुए है,
वेन नक्षरों ज़मान पर गिर गया।।

हम प्रतीकों से हिखरे हुए दर्पणों की तरह है।
मैं दिशाओं की तलाश में चला गया।
हम गिरी हुई बाधाओं की तरह है।
चुपचाप वह चुप हो गया।।

समय के बताए गए रास्तों पर हम
हाथ में हाथ डाले चल पड़े।
आप जीवन की नब्ज है,आत्मा।
आईए एक साथ आसमान में चमके।।

अच्छे व्यवहार का रहस्य

आर्या एम एस

एक बार की बात है संत तुकाराम अपने आश्रम में बैठे हुए थे। तभी उनका एक शिष्य, जो स्वाभाव से थोड़ा क्रोधी था उनके समक्ष आया और बोला,
" गुरूजी, आप कैसे अपना व्यवहार इतना मधुर बनाये रहते हैं, ना आप किसी पे क्रोध करते हैं और ना ही किसी को कुछ भला-बुरा कहते हैं?"
कृपया अपने इस अच्छे व्यवहार का रहस्य बताइए।

संत बोले," मुझे अपने रहस्य के बारे में तो नहीं पता, पर मैं तुम्हारा रहस्य जानता हूँ !"

"मेरा रहस्य! वह क्या है गुरु जी?", शिष्य ने आश्चर्य से पूछा।

" तुम अगले एक हफ्ते में मरने वाले हो!", संत तुकाराम दुखी होते हुए बोले।

कोई और कहता तो शिष्य ये बात मजाक में टाल सकता था, पर स्वयं संत तुकाराम के मुख से निकली बात को कोई कैसे काट सकता था? शिष्य उदास हो गया और गुरु का आशीर्वाद ले वहां से चला गया।
उस समय से शिष्य का स्वाभाव बिलकुल बदल सा गया। वह हर किसी से प्रेम से मिलता और कभी किसी पे क्रोध न करता, अपना ज्यादातर समय ध्यान और पूजा में लगाता। वह उनके पास भी जाता जिससे उसने कभी गलत व्यवहार किया हो और उनसे माफ़ी मांगता।

देखते-देखते संत की भविष्यवाणी को एक हफ्ते पूरे होने को आये। शिष्य ने सोचा चलो एक आखिरी बार गुरु के दर्शन कर आशीर्वाद ले लेते हैं।

वह उनके समक्ष पहुंचा और बोला, " गुरु जी, मेरा समय पूरा होने वाला है, कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिये!"

“मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है पुत्र। अच्छा, ये बताओ कि पिछले सात दिन कैसे बीते? क्या तुम पहले की तरह ही लोगों से नाराज हुए, उन्हें अपशब्द कहे?”, संत तुकाराम ने प्रश्न किया।

“नहीं-नहीं, बिलकुल नहीं। मेरे पास जीने के लिए सिर्फ सात दिन थे, मैं इसे बेकार की बातों में कैसे गँवा सकता था? मैं तो सबसे प्रेम से मिला, और जिन लोगों का कभी दिल दुखाया था उनसे क्षमा भी मांगी\”, शिष्य तत्परता से बोला।

संत तुकाराम मुस्कुराए और बोले, “बस यही तो मेरे अच्छे व्यवहार का रहस्य है। मैं जानता हूँ कि मैं कभी भी मर सकता हूँ, इसलिए मैं हर किसी से प्रेमपूर्ण व्यवहार करता हूँ, और यही मेरे अच्छे व्यवहार का रहस्य है\

शिष्य समझ गया कि संत तुकाराम ने उसे जीवन का यह पाठ पढ़ाने के लिए ही मृत्यु का भय दिखाया था, उसने मन ही मन इस पाठ को याद रखने का प्रण किया और गुरु के दिखाए मार्ग पर आगे बढ़ गया।

कबीर दास

एक रहस्यमय कवि और भारत के महान संत दास कबीर दास का जन्म वर्ष 1440 में हुआ था और उनकी मृत्यु 1518 में हुई थी। इस्लाम के अनुसार, कबीर का अर्थ कुछ बहुत बड़ा और महान है। कबीर पंथ एक विशाल धार्मिक समुदाय है जो कबीर को संत मत संप्रदाय के प्रवर्तक के रूप में पहचानता है। कबीर पंथ के सदस्यों को कबीर पंथी के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने पूरे उत्तर और मध्य भारत में विस्तार किया था। कबीर दास के कुछ महान लेखन बीजक, कबीर ग्रंथावली, अनुराग सागर, सखी ग्रंथ आदि हैं। यह स्पष्ट रूप से उनके जन्म के बारे में ज्ञात नहीं है, लेकिन यह ध्यान दिया जाता है कि उनका पालन-पोषण एक बहुत ही गरीब मुस्लिम बुनकर परिवार ने किया था। वे बहुत आध्यात्मिक थे और एक महान साधु बन गए। अपनी प्रभावशाली परंपराओं और संस्कृति के कारण उन्हें दुनिया भर में प्रसिद्धि मिली।

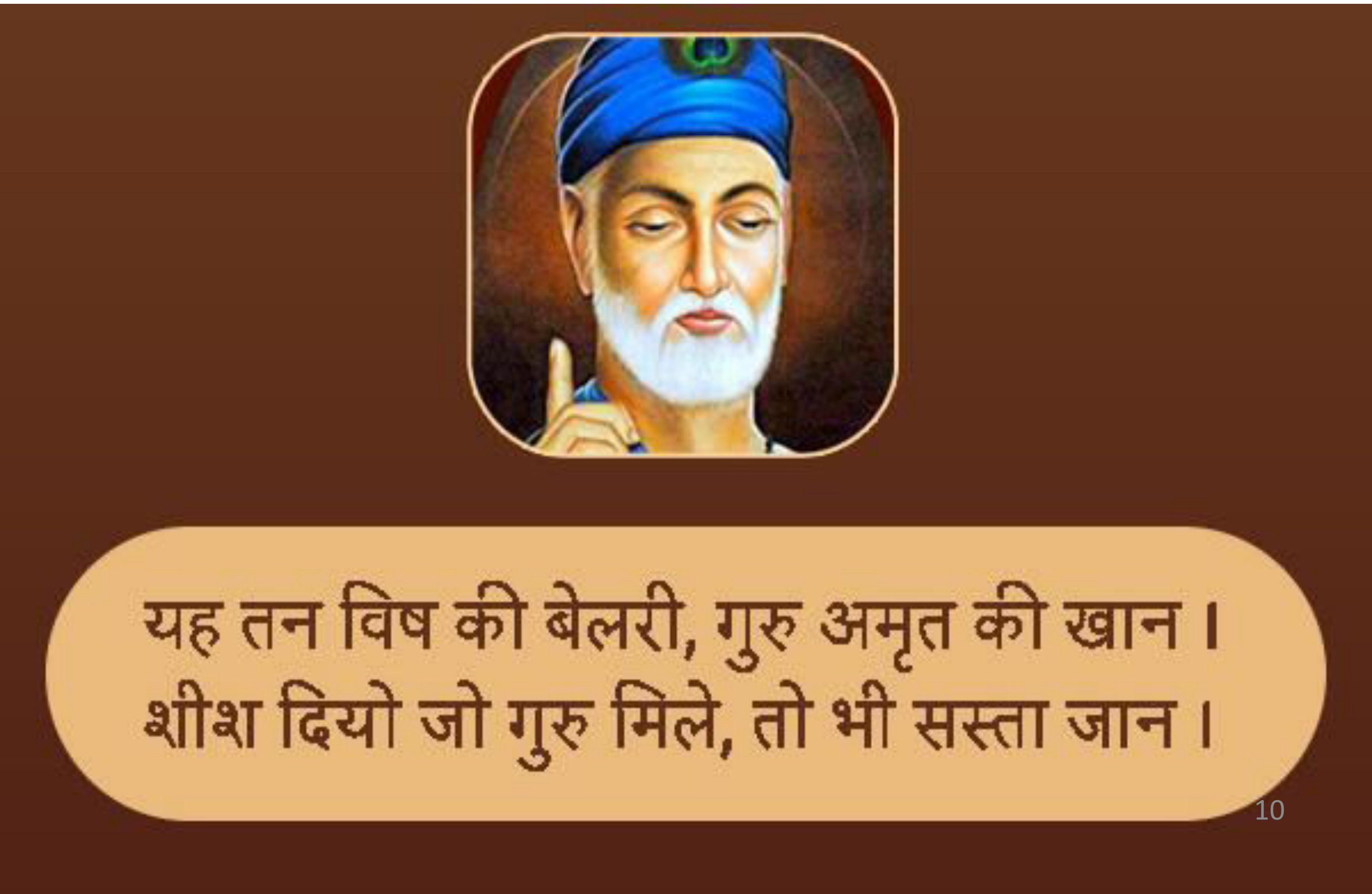

ऐसा माना जाता है कि उन्होंने बचपन में ही अपने सभी आध्यात्मिक प्रशिक्षण अपने गुरु रामानंद से प्राप्त कर लिए थे। एक दिन, वह गुरु रामानंद के प्रसिद्ध शिष्य बन गए। कबीर दास का घर छात्रों और विद्वानों के रहने और उनके महान कार्यों के अध्ययन के लिए रखा गया है।

कबीर दास के जन्म माता-पिता का कोई सुराग नहीं है क्योंकि उनकी स्थापना नीरू और नीमा (उनके देखभाल करने वाले माता-पिता) द्वारा वाराणसी के एक छोटे से शहर लहरतारा में की गई थी। उनके माता-पिता बेहद गरीब और अशिक्षित थे लेकिन उन्होंने छोटे बच्चे को दिल से गोद लिया और उसे अपने व्यवसाय के बारे में प्रशिक्षित किया। उन्होंने एक साधारण गृहस्थ और एक फकीर का संतुलित जीवन जिया।

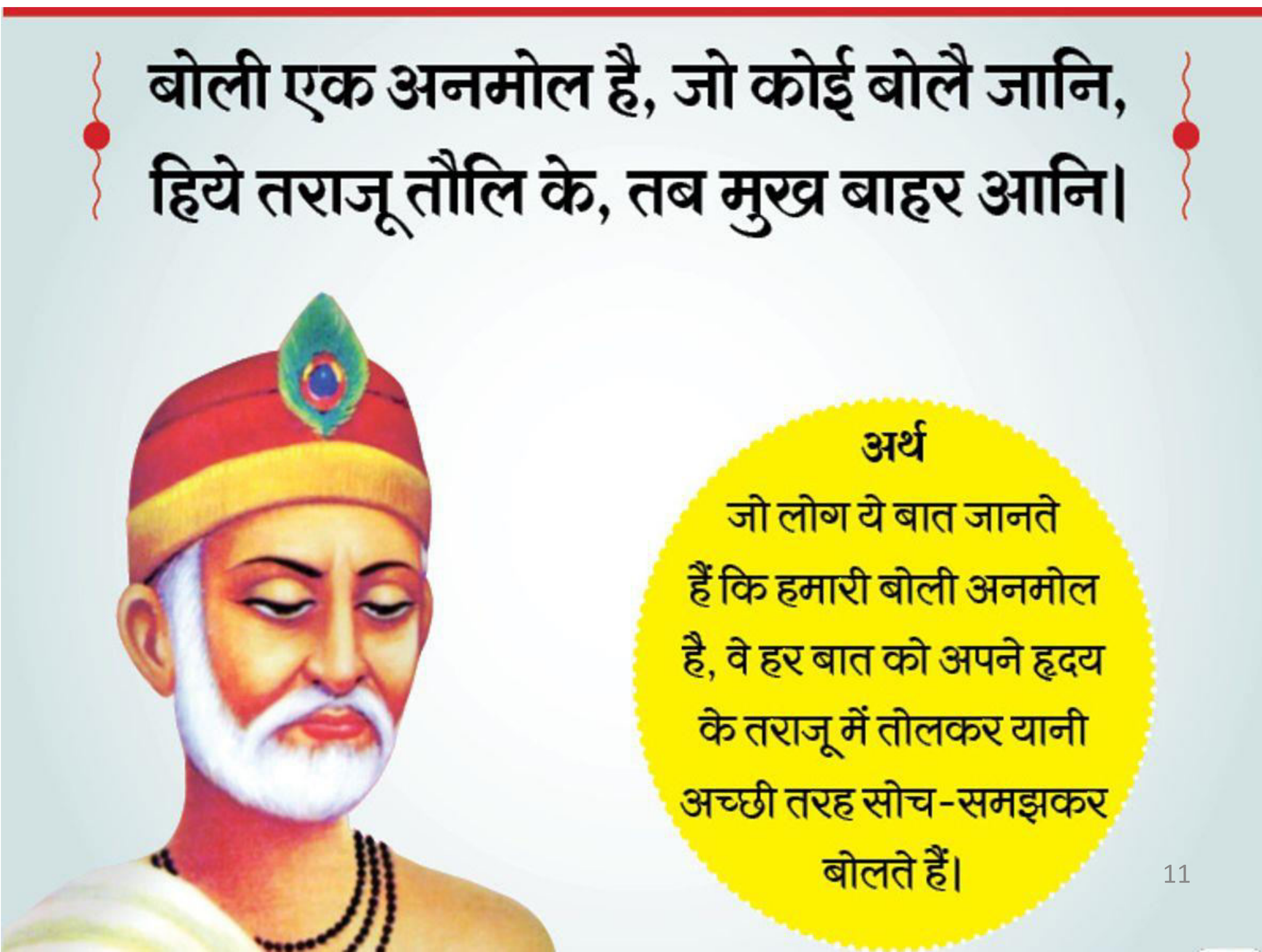

मुंशी प्रेमचंद

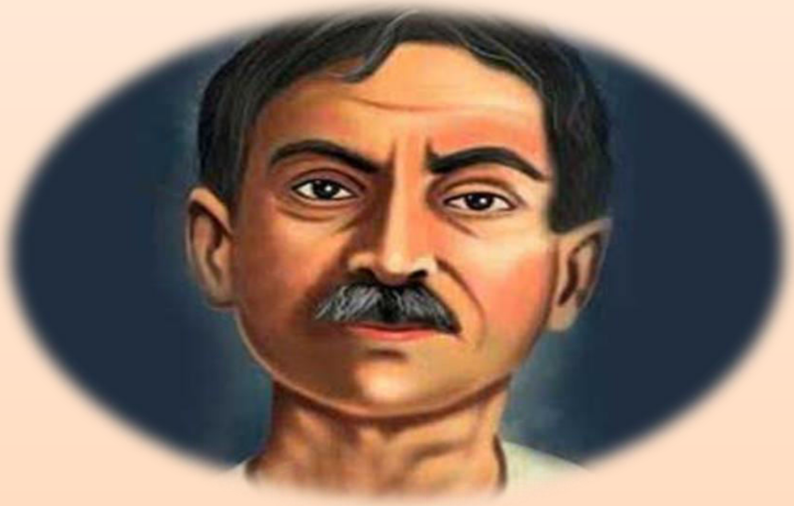

मुंशी प्रेमचंद हिंदी और उर्दू में उपन्यासों और लघु कथाओं के भारतीय लेखक जिन्होंने भारतीय विषयों को पश्चिमी साहित्यिक शैलियों के अनुकूल बनाने में अग्रणी भूमिका निभाई।प्रेमचंद ने 1921 तक एक शिक्षक के रूप में काम किया, जब वे मोहनदास के. गांधी के असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए। एक लेखक के रूप में, उन्होंने पहली बार अपने उर्दू भाषा के उपन्यासों और लघु कथाओं के लिए प्रसिद्धि प्राप्त की। बंगाल को छोड़कर, प्रेमचंद की कृतियों के प्रकट होने तक, उत्तर भारत में लघुकथा एक स्वीकृत साहित्यिक रूप नहीं थी। हालाँकि, हिंदी में अपने कामों के लिए सबसे ज्यादा जाने जाने वाले, प्रेमचंद ने अपने मध्य वर्षों तक उस भाषा में पूर्ण प्रवाह हासिल नहीं किया था। उनका पहला प्रमुख हिंदी उपन्यास, सेवासदना (1918; "हाउस ऑफ सर्विस"), भारतीय मध्यम वर्ग के बीच वेश्यावृत्ति और नैतिक भ्रष्टाचार की समस्याओं से निपटता है। प्रेमचंद की कृतियाँ अरेंज मैरिज की सामाजिक बुराइयों, ब्रिटिश नौकरशाही के दुर्व्यवहार और साहूकारों और अधिकारियों द्वारा ग्रामीण किसानों के शोषण को दर्शाती हैं।प्रेमचंद की अधिकांश श्रेष्ठ कृतियाँ मानसरोवर ("द होली लेक") शीर्षक से हिंदी में एकत्रित उनकी 250 या उससे अधिक लघु कथाओं में से हैं। रूप और शैली में कॉम्पैक्ट, वे अपने उपन्यासों की तरह, अपने विषय के लिए उत्तरी भारतीय जीवन की एक विस्तृत श्रृंखला पर आकर्षित करते हैं। आमतौर पर वे एक नैतिक संकेत देते हैं या एक मनोवैज्ञानिक सत्य को प्रकट करते हैं।प्रेमचंद के उपन्यासों में शामिल हैं: प्रेमाश्रम (1922; "लव रिट्रीट"), रंगभूमि (1924; "द एरिना"), घबन (1928; "गबन"), कर्मभूमि (1931; "एरिना ऑफ एक्शन"), और गोदान (1936; द एरिना) गाय का उपहार)।

बापुजी हमारा राष्ट्रपिता

षिबिन एस बी

आँखों पर चश्मा हाथ में लाठी
और चेहरे पर मुस्कान,
दिल में था उनके हिंदुस्तान,
अहिंसा उनका हथियार था,
अंग्रेजों पर भारी जिसका वार था,
जात-पात को भुला कर वो जीना
सिखाते थे,
सादा हो जीवन और अच्छे हो
विचार,
बड़ो को दो सम्मान और छोटो को
प्यार,
बापू यही सबको बताते थे,
लोगों के मन से अंधकार मिटाते
थे,
स्वच्छता पर वे देते थे जोर,
माँ भारतीय से जुड़ी थी उनकी
दिल को डोर,
ऐसी शख्सियत को हम कभी भूला
ना पाएंगें,
उनके विचारों को हम सदा
अपनायेंगे।

स्वास्थ्य जीवन की उपयोग

समीर और नकुल बचपन से अच्छे दोस्त रहे। दोनों बैलूर में काम करते हैं। समीर एक कालेज में छात्रों को गणित पढ़ाता है। नकुल आईटी कंपनी में काम करता है।दोनों एक ही फ्लैट में किराए में रहते है। समीर हमेशा कालेज से सीधे अपने कमरा में आया करता है। वह बाहर ज्यादा घूमने-फिरने नहीं जाता है ।हर दिन फ्लैट पहूँचते ही कपड़े बदलने के बाद साबुन से हाथ-पाव धोता है। फिर सिधे रसोईघर में घुसकर चाय बनाता है। अदरक और इलाइची पीसकर पानी में डालता है,पानी गरम कराता है और चाय की पत्ती, दूध और चीने मिलाकर चाय बनाता है। बालकणी के कोने में पडी कुर्सी में आरम से बैठकर गाने सुनाता है और चाय के मज़े लेता है। समीर अपने सेहत का खूब ख्याल रखता है।इसलिए वह बाहर से ज्यादा खाना-पीना नहीं खाता है और धूम्रपान और शराब को अपने से दूर रखता है।वह कालेज में छात्रों को पढाने के साथ राष्ट्रीय सामाजिक योजना में भी शामिल है। परिस्थिति संरक्षण,कूडे-कचरे हटाने जैसे कई काम में समीर भाग लेता है। साल में दो बार सरकारी अस्पताल में अपने छात्रों के साथ जाकर रक्तदान करता है। समीर इस प्रवृत्ति को बडे आदर के साथ देखता है।इसलिए वह अपने स्वास्थ्य का खूब ध्यान रखता है।

लेकिन नकुल अपने काम की परेशानियों को भूल जाने केलिए हर दिन शाराब पीता है। समीर उनके साथ न देने के कारण अपने कंपनी के अन्य कर्मचारियों के साथ शारब एवं तला हुआ खाना खाता है।शाराब में मुग्ध होकर वह हर दिन आधी रात को कमरे में लौटता है। कभी-कभी शाराब के नशे में अपना कमरा भूल जाता है और इसके लिए दूसरों से लडता भी है।फ्लैट के अन्य निवासियों ने समीर से शिकायत की – “देखो समीर जी, आप बहुत शरीफ इनसान है, मगर आपके दोस्त आपका नाम और इस मकान का नाम खराब कर देगा ।“

“मैं जानता हूँ, इस बार मेरे दोस्त को माफ कीजिएगा, मैं उनसे बात करता हूँ। आप लोग निश्चित होकर जाइए।“ -समीर सबको सावधान करके बापस भेजता है।

अगले दिन योगा करने के बाद समीर सीधे नकुल के कमरे में जाता है। नकुल उस समय भी कल के कपडे पहनकर बिस्तर में मोबाइल देखकर लेट रहा है।

“अरे, नकुल तुम यह क्या हाल बना रखा है?...अपनी सेहत देखो, शराब पी-पीकर तूम दुबले बन गए हो और तुम्हारा पेट बडा हो रहा है और आखें के नीचे लाल-लाल पड गया हैं। प्लीस यार,यह विष पीना बन्द करो। नहीं तो तुम मर जाओगे।“ – समीर ने नकुल से विनिती की ।

“समीर मिया, मैं सुबह से उपदेश सुनने के मूड में नहीं हूँ, आज तुम्हें कालेज नहीं जाना है क्या ?”- विस्तर से उठकर बैठे हुए नकुल पूछता है।

“मुझे कालेज जाना है, लेकिन जाने से पहले मैं तुम से थोड़ा बात करना चाहता हूँ।“ -समीर ने बिस्तर पर बैठते हुए कहा।
“देखो समीर, मेरी नौकरी जो है, उसमें परेशानियाँ ज्यादा है। फिर कभी-कभी मुझे टीना की याद आती है। यह सब भूलने केलिए मैं शारब पीता हूँ । पता है तुमको, यह शारब जो है बहुत कमाल का काम करती है,हमें इस दुनिया से …हमारे पीढ़ाओं से दूर ले जाती है। तब मुझे खुशी मिलती है।“ -नकुल ज़ोर-ज़ोर से हस्ते हुए कहता है।

“तुम यह क्या बकबास कह रहे हो नकुल….टीना की शादी हो चुकी है। अब वह तुम्हारी प्रेमिका नहीं बल्कि किसी ओर की पत्नी है।इसलिए उसके बारे में सोचकर अपना जिन्दगी बरबाद करना बेकार है। और तुम्हारी नौकरी ….चाहे तुम्हारा हो या मेरा ….किसी भी काम आसान नहीं है। सभी में अपनी-अपनी परेशानियां एवं मूसीबतें होती है। हमें इन सबका सामना करना चाहिए । उससे भागना नहीं ।“-समीर आरम से नकुल को समझाने की कोशिश करता है।
“बस करो समीर, मुझे मालूम है, यहाँ सब मुझसे परेशान है। मैं चले जाता हूँ । मैं तुम्हें ज्यादा तंग करना नहीं चाहता हूँ ।“-नकुल बिस्तर से उठकर अपने अलमेरा के पास जाता है।
“मैं ने कब तुम से कहा कि ..यहाँ से चले जाओ …जो चाहे वहीं करो..आगे से मैं कभी इस पर बात नहीं करूँगा। बस इतना कहना चाहता हूं कि तुम्हारा ब्लड ग्रूप और मेरा ब्लड ग्रूप समान है । और यह बहुत दुर्लभ भी है। इसलिए कुछ हो जाने पर खून मिलना मुश्किल होगा। इसलिए अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखा करो और कम से कम साल में एक बार रक्तदान किया करो“–समीर ने उतना कहकर नकुल के कमरे से बाहर निकलता है। नकुल जवाब दिए बिना मुडकर खडे हो जाता है।

समीर कालेज के लिए निकलता है ।रास्ते में चलते वक्त समीर नकुल के बारे में सोचता है। सोचते-सोचते जब सडक पार कर रहा था तब एक कार तेज़ी से आती है और समीर को टक्कर मार देती है और बिना रुके चला जाता है।समीर के शरीर से खून बहने लगा और वह बेहोश हो पडा। उसे तुरन्त अस्पताल में पहूँचाया ।

इस समय समीर से बुरी व्यवहार करने से उदास होकर नकुल सीधे शराब पीने गया था । खबर मिलते ही वह अस्पताल में पहूंचता है।नकुल आईसीयू के बाहर खड़े समीर के कालेज के छात्रों और अध्यापकों के पास जाता है । एक लडका ने नकुल के पास आकर उनका हाथ पकडता है।

"सर, समीर सर की हालत बिगड़ गयी है। खून बहुत बह गया है। उन्हें 'ओ नेगटीव' खुन चाहिए । हमने कालेज में खबर कर दी है। वहाँ से लोग आते होंगे। आप निश्चित रहिए।"
नकुल तुरन्त प्रयोगशाला की ओर भागता है।
"सिस्टर...सिस्टर.... मेरे दोस्त समीर को बचाओ । मेरा खून 'ओ नेगटीव' है। जितना चाहिए उतना ले लो ..प्सीज़...।"-नकुल प्रयोगशाला के परिचार्य से प्रार्थना की ।
"आप सावधान हो जाइए । आप अंदर आईए ।"-परिचार्य ने नकुल को प्रयोगशाला के अंदर बुलाया।
नकुल अंदर घुसते ही सभी कर्मचारियों ने अपना नाक बंद कर देते हैं । नकुल सब को आश्चर्य से देखता है।
"क्या?...क्या हुआ?...."-नकुल चकित होकर पूछता है।
"क्या आप शराब रखी है?.."-एक परिचार्य ने सवाल किया ।
"हाँ..थोड़ा पी ली थी। लेकिन उसका क्या... आप लोग मेरा खून ले लो ...समीर को बचाओ ।"
-नकुल हाथ जोड़कर उनसे विनती की।
"देखिए, हम आपका खून नहीं ले सकते ।"
"क्यों"
"आप ने शराब पी रखी है। शराबी से खून लिया तो रोगी की हालत बिगड जाएगी। इसलिए आप अभी-के-अभी यहाँ से चले जाइए। हमें कोई ओर रास्ता ढूढनो होगा।"
नकुल विवश होकर फूट-फूटकर रोने लगा। सब कर्मचारी निस्साहाय होकर एक-दूसरे को देखते हैं। तब एक वयस्क परिचार्य ने आगे आकर नकुल के कधों में हाथ रखकर बोली- "देखो बेटे, रक्तदान महादान है।केवल स्वास्थ्य व्यक्ति ही रक्तदान कर सकता है। तुम ने शराब नहीं पी होते तो तुम्हारे दोस्त को तुमहारे ही खून दे सकते थे । मगर यह अब तुमसे नहीं होगा। एक बात ध्यान रखो,शराब पीने से हमारे स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।इससे हमें और हमारे आस-पास के लोगों को नुकसान होता है। इसलिए तुम्हें आगे से अपने स्वास्थ्य पर ध्यान रखना चाहिए ।तब साल में दो बार तुम रक्तदान भी कर सकते हो । उससे आपकी और दूसरों की भी भलाई हो जाएगी।"–परिचार्य ने प्यार से नकुल को समझाया ।

समीर ने मुझे कई बार समझाने की कोशिश की, लेकिन शाराब के नशे में मैं उसकी बातों को अनसुनी करती रहा। यह शराब शैतान है । आज से मैं कभी शराब नहीं पीऊँगा। मैं भी समीर की तरह अपनी सेहत का ध्यान रखूँगा और साल में दो बार रक्तदान करूँगा। नकुल दृढ़ निश्चय लेकर प्रयोगशाला से बाहर निकलता है । तब समीर के कालेज के कुछ छात्रों ने प्रयेगशाला के अंदर रक्तदान केलिए घुस जाता है। यह दृश्य देखकर नकुल को काफी राहत मिलता है।

"सपने वो नहीं जो आप नींद में देखें
सपने वो जो है आपको नींद ही न आने देते।"

-ए पी जे अब्दुल कलाम

रात

सनिका त्यन,चरित्र विभाग

रात को अंधेरा हो रहो है।
कुछ समय केलिए कुछ रैकून गिलहरी।

चाँदनी के फैलने के ठीक पहले
शाम से पहले रोशनी चली जाती है।

फूलों को खुशबू फैलने से पहले
सितारों के पलक झपकने का समय है।

रात को अंधेरा हो रहो है।
कुछ समय केलिए कुछ रैकून गिलहरी।

गतिविधियों की छवियां

जीवन कौशल और शांति क्लब युवा का उद्घाटन

हिंदी क्लब "हिंदी जान" का उद्घाटन

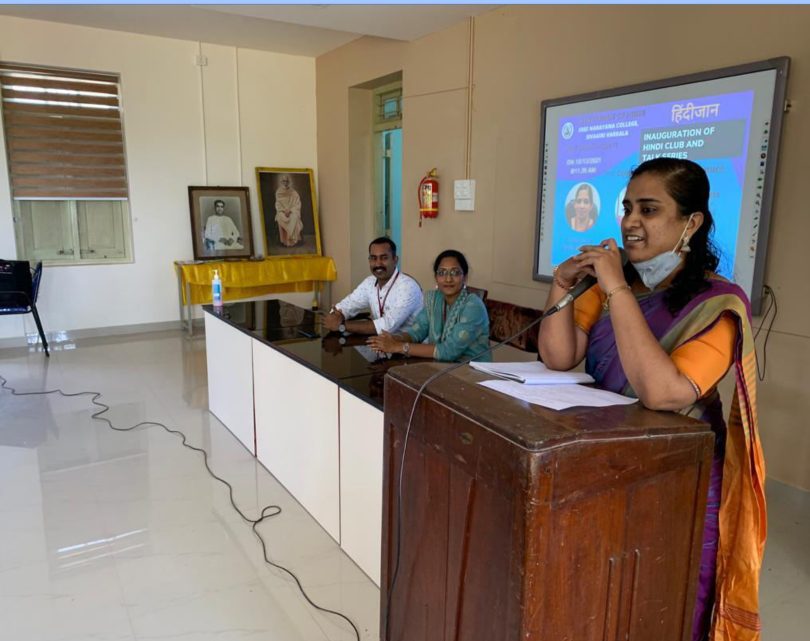

बच्चों के चित्र बनाने का काम

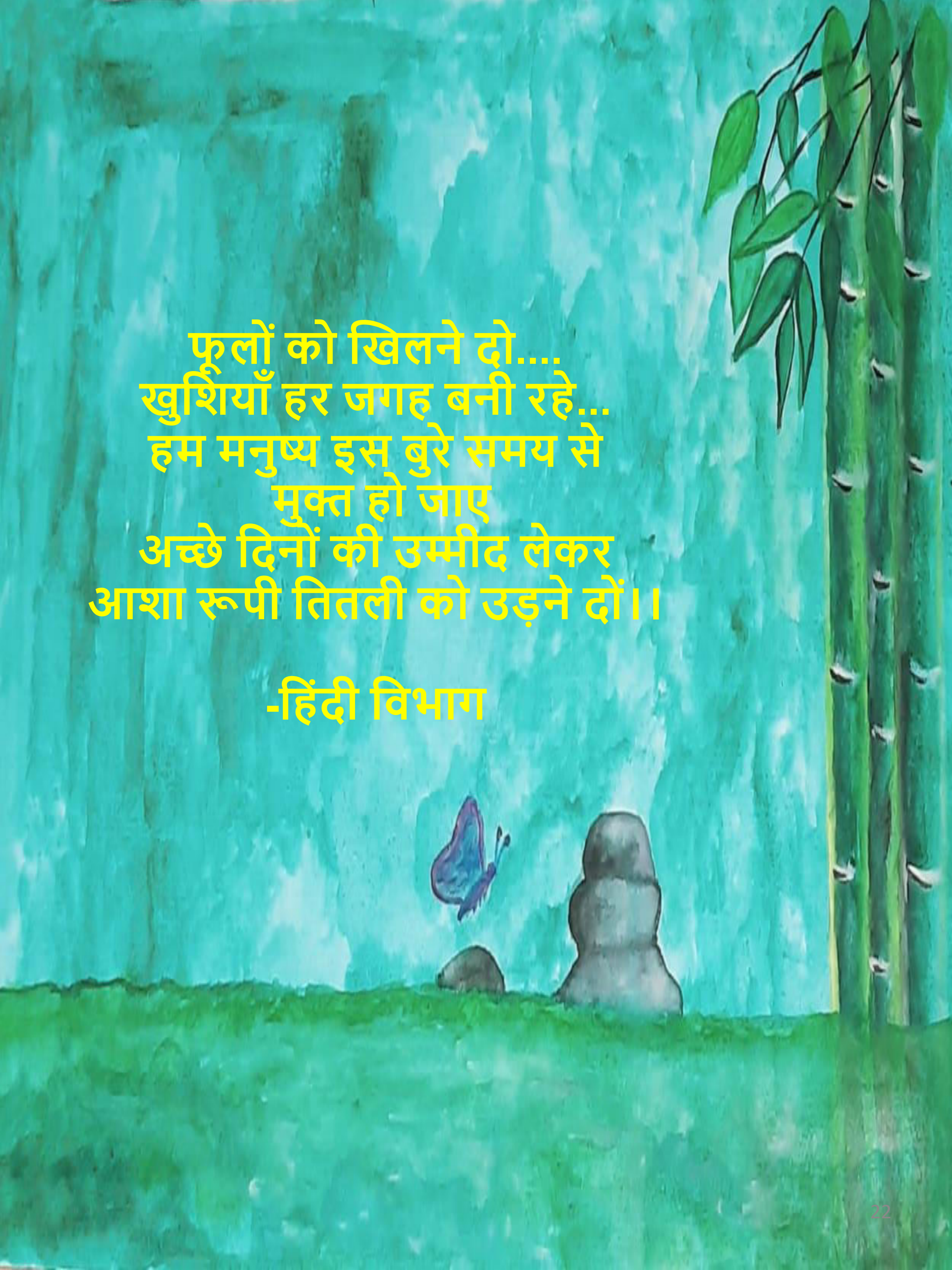
फूलों को खिलने दो....
खुशियाँ हर जगह बनी रहे...
हम मनुष्य इस बुरे समय से
मुक्त हो जाए
अच्छे दिनों की उम्मीद लेकर
आशा रूपी तितली को उड़ने दों।।
-हिंदी विभाग